January 2022

Volume - IX Issue I
Research Journal
ISSN No. 2277-7067

Journal of Fundamental & Comparative Research

शोधसंहिता

A Peer Reviewed Bi-annual Interdisciplinary Research
Journal of the University

UGC CARE Listed Journal
New Research Frontiers

- Patron -
Prof. Shrinivasa Varkhedi
Vice Chancellor

- Chief Editor -
Prof. Madhusudan Penna
Director, Research & Publication

- Editor -
Dr. Rajendra C. Jain
Dept. of Sanskrit Language & Literature

राष्ट्रहिताय संस्कृतम्

KAVIKULAGURU KALIDAS SANSKRIT UNIVERSITY
RAMTEK

Scanned with OKEN Scanner

Index

1	स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा का विकास	डॉ. मुन्नी देवी	858-861
2	IMPACT OF ICT IN PU COLLEGES –A COMPARATIVE STUDY OF GOVERNMENT AND PRIVATE PU COLLEGES IN THE BALLARI DISTRICT, KARNATAKA	Gosavi Krishna Bhat Kiran P Savanur	862-873
3	EVALUATION OF HEALTH EDUCATION HEALTH AWARENESS AMONG PUNJABI POPULATION: A FITNESS CONCERN	Malook Singh Prof.Dr Paramvir Singh Manjeet singh	874-883
4	UTILIZATION OF LIBRARY RESOURCES BY THE ENGINEERING STUDENTS IN REFERENCE TO THEIR ACADEMIC HIERARCHY –A STUDY OF UNIVERSITY INSTITUTE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY KURUKSHETRA	Sunita	884-892
5	शिक्षकों के समायोजन पर आई.सी.टी. के प्रतिजागरूकता के प्रभाव का अध्ययनः जांजगीर जिले के विशेष संदर्भ में	रामचंद्र पाण्डेय प्रो.(डॉ.) परविंदर हसंपाल	893-899
6	हरियाणा राज्य में पीएमकेवीवाई के अन्तर्गत प्रशिक्षण पूर्ण कर चुके लाभार्थियों की सामाजिक शैक्षणिक पृष्ठभूमि का विवरण	रविन्द्र कुमार प्रो० सेवा सिंह दहिया	900-906
7	इंटरनेट के माध्यम से अधिगम का विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन	संध्या मोहबे डॉ. संगीता सराफ	907-912
8	ZERO WASTAGE SUSTAINABLE PRACTICES IN CLOTHING INDUSTRY WITH SPECIAL REFERENCE TO TONLE' CAMBODIA	Swati Malik Dr Deepika Purohit	913-917
9	THE EFFECT OF AGE AND GENDER ON LOCUS OF CONTROL	Ms. Fouzia Prof. Madhulata Nayal Dr. Kamala D. Bhardwaj	918-925
10	META ANALYSIS OF SCIENTIFIC PRODUCTIVITY OF 'COVID 19 VACCINES' RESEARCH IN WORLDWIDE DURING 2020 TO 2022(MARCH): A SCIENTOMETRIC STUDY OF LITERATURE PUBLISHED IN DOAJ OPEN ACCESS DATABASE	Ashis Kumar Some Dr. Barnali Roy Choudhury	926-934
11	A REVIEW ON USING PLASTIC BRICK MADE FROM PLASTICWASTE WITH REFERENCE TO NAVI MUMBAI REGION	Dr. Bhagyashree M Bhoir	935-941
12	LEARNING CONCEPTS- THEORY & IMPLEMENTING AN ACTION PLAN	Dr. Seema K Bhandare	942-948
13	STUDY THE STREAM OF CONSCIOUSNESS TECHNIQUE IN 'UNTOUCHABLE': MULK RAJ ANAND	Ms.Rekha Dube Dr.Tarun Patel	949-952
14	DOES TECHNOLOGY AN IMPORTANT FACTOR IN SALES OF SMARTWATCHES?	Ram Lubhaya Dr. Parveen Lata	953-962

Scanned with OKEN Scanner

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भाषा का विकास

*डॉ. मुन्नी देवी

*सहायक प्रवक्ता, गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज, संतपुरा, यमुनानगर

शोध सार

किसी भी देश की पहचान उसकी भाषा एवं संस्कृति से होती हैं। हिन्दी एक भाषा नहीं एक संस्कृति है, एक वैचारिक क्रांति है। अर्थात् आम जन की भाषा है। जो भाषा समस्त देश में जन–जन के विचार विनमय का साधन हो, वह राष्ट्रभाषा कहलाती है। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय संवाद–सम्पर्क की आवश्यकता की उपज होती है। वैसे तो सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषा कही जा सकती है, किन्तु राष्ट्र की जनता जब स्थानीय एवं तात्कालिक हितों व पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र की कई भाषाओं में से एक भाषा को चुनकर उसे राष्ट्रीय अस्मिता का एक आवश्यक उपादान समझने लगती है तो वही राष्ट्रभाषा कहलाती है। स्वतंत्रता सग्राम के दौरान सम्पूर्ण देशं को एकता के सूत्र में बांधने के लिए एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता महसूस हुई, हिन्दी भाषा ही एक ऐसी भाषा थी जिसने सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया अर्थात् सम्पूर्ण राष्ट्र के बीच भावनात्मक एकता स्थापित की। राष्ट्रभाषा स्वभाषा ही हो सकती है क्योंकि उसी के साथ देश की जनता का भावनात्मक लगाव होता है। किसी विदेशी भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सकता है। किसी भी देश की प्रगति उसकी राष्ट्रभाषा के बिना नहीं हो सकती। थियोसोफिकल सोसायटी (1875 ई0) की संचालिका श्रीमति ऐनीबेसेंट ने कहा था। भारतवर्ष के विभिन्न भागों में जो अनेक देशी भाषाएँ बोली जाती है उनमें से एक भाषा ऐसी है जो सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करेगी वह भाषा हिन्दी है हिन्दी भाषा में वे गुण है जो हर देशवासी के अन्दर भावनात्मक सम्बंध स्थापित कर सके। सम्पूर्ण भारत की एकता को सूत्र में बाँध सके। भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य हो सके।

मुख्यशब्द– अवहठ स्वदेशीयपन, सैनानी, जहान, गुरुत्तर, अभिवृधि, भाखा और अस्मिता।

आजादी से पूर्व पूरे भारत देश को एकता के सूत्र में बांधने के लिए अखिल भारतीय भाषा की अवधारणा आवश्यक मानी जाती रही है यद्यपि मध्यकाल (मुस्लिम शासन) में राष्ट्रभाषा हिन्दी और राजभाषा फारसी में कभी कोई विरोध या द्वंद की स्थिति नहीं थी। वैसे भाषा और साहित्य के स्तर पर हिन्दी का उदय लगभग ग्यारहवीं शताब्दी से माना जाता है तब से लेकर आज तक राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की विकास यात्रा को मुख्य रूप से तीन चरणों में बांटा जा सकता हैः–

- आदिकाल
- मध्यकाल
- आधुनिक काल

आदिकाल के आरम्भिक समय में तेरहवी शताब्दी तक भारत देश में जिन बोलियों का प्रयोग होता है। वे विकसित हो चुकी थी। कहीं उन्हें देशभाषा कहीं अवहठ डिंगल पिंगल आदि कहा गया। आगे चलकर यही पुरानी हिन्दी कही जाने लगी। इससे सर्वप्रथम हिन्दुई, हिन्दवी अथवा हिन्दी के नाम से पहचान मिली। अमीर खुसरो ने खलिक बारी में संयोगवश तेरहवी शताब्दी के अंतिम दशक में, जब दिल्ली की खिलजी सल्तनत का दक्षिण तक विस्तार हो गया तब दिल्ली और मध्य देश की बोलियों का प्रचार –प्रसार दक्षिण में भी होने लगा। अमीर खुसरो स्वयं वहाँ गये। उन्हीं का अनुसरण कर जिस फारसी हिन्दी मिश्रित भाषा शैली में रचनाएँ की वही दक्षिण दकिखनी हिन्दी के रूप में जानी जाती है। 14वीं 15वीं शताब्दी में दक्षिण के लगभग लोगों दरबारो, साहिब की भाषा दक्षिणि हो गयी।[1]

15वी शताब्दी के बहमणी वंश के शासन काल में बीजापुर, गोलकुण्डा, बरार, बीदर औरंगाबाद का राजकाज संबंधी कार्य इसी दक्षिणी हिन्दी में होता था।

Scanned with OKEN Scanner

मध्ययुग में भक्ति आन्दोलन के प्रभाव से हिन्दी भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक जन भाषा बन गयी। यह युग सांस्कृतिक पुनरूस्थान का युग था। लोक संस्कृति लोकभाषा का माध्यम पाकर ही सिकसित होती है। सन्तो भक्तों ने समस्त पौराणिक प्रवृत्तियों को जनता को अपनी भाषा में सहज मधुर और गेय शैली में प्रस्तुत किया। उस लोक भाषा को भाषा या भाखा कहा गया –

दशन कधां भागौत की भाषा करी बनाई – गुरूगोविन्द सिंह

लिखि भाखा चौपाई कहै– जायसी

संसिकरत है कूप जल भाषा बहता नीर (कबीर दास)

भाषा भनिति मोरि मति मोरी – तुलसीदास

भाषा बोल न जानही जेहिं के कुलदास (केशवदास)

असम में शंकरदेव महाराष्ट्र में नामदेव, पंजाब में नानक देव सिंध में फरीद और मध्यदेश में जायसी, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, आदि की वाणी इसी लोकभाषा में प्रस्फुटित हुई है। जिस प्रकार आदिकाल में खुसरों ने इसे हिन्दवी अथवा हिन्दी कहा था। उसी प्रकार मध्य युग में सूफी कवियों ने इसे हिन्दवी अथवा हिन्दी कहा।

अरबी फारसी हिन्दवी, भाषा जेति आहि– जायसी

का बहुतै जो हिन्दी भाखौ – नूर मोहम्मद

आधुनिक युग ने स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान हिन्दी भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक बन गयी है।[1]

प्रेमचन्द के शब्दों में

"भारत की राष्ट्रीयता एक राष्ट्रभाषा पर निर्भर है और दक्षिण के हिन्दी प्रेमी राष्ट्रभाषा का प्रचार करके राष्ट्र का निर्माण कर रहे है। राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र का बोध नहीं हो सकता है। जहां राष्ट्र है वहा राष्ट्रभाषा का होना लाजमी है। अगर सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र बनाना है। तो उसे एक भाषा का आधार लेना पड़ेगा।[2]

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में आधुनिक युग का आरम्भ 1850 ई. के आसपास माना जाता है। वैसे 1800 ई में जब पोर्टविलियम कॉलेज की स्थापना हुई तो उसमें एक हिन्दी (हिन्दूस्तानी) विभाग खोला गया यही से खड़ीबोली हिन्दी को विकसित होने का अवसर मिला 1803 ई. में कम्पनी ने घोषणा की कि –

प्रशासनिक सेवा में केवल उसी व्यक्ति को जिम्मेदार पद पर नियुक्त किया जायेगा जिसे गवर्नर जनरल द्वारा बनाए गए कानूनों को अम्ल में लाने के लिए हिन्दुस्तानी खड़ीबोली हिन्दी का ज्ञान हो। आधुनिक युग में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। 30 मार्च 1926 ई0 को कलकत्ता से आरम्भ होने वाले हिन्दी के सबसे पहले पत्र उत्दंत मार्तड के योगदान का उद्देश्य यही था कि लोगों को पराई भाषा अंग्रेजी से विरत करके अपनी भाषा (हिन्दी की ओर उन्मुख किया जाये।

अंग्रेजी को पराई भाषा मानकर अपनी नीजी भाषा हिन्दी में अखबार निकालने की यह तड़प वास्तव में राष्ट्रीय चेतना के सन्दर्भ में राष्ट्रभाषा के महत्त्व को भी स्वीकार करने की शुरूआत थी।

राष्ट्रकवि दिनकर ने कहा है जैसे 19वी सताबदी में बंगोत्पन्न भारतीय नेताओं ने देश की धार्मिक एवं जातीय एकता के विषय में सावधान किया उसी प्रकार पहले पहल यह आवाज भी बंगाल से उठी कि भारतीय राष्ट्रीयता की अभिवृद्धि के लिए अंग्रेजी के स्थान पर किसी भारतीय भाषा को प्रतिष्ठित करना नितान्त आवश्यक है और यह भाषा एक मात्र हिन्दी ही हो सकती है।

केशव चन्द्र जैन इंण्डियन मिरर 1857 में लिखा है। कि हिन्दी ही अखिल भारत की जातीय भाषा या राष्ट्रभाषा बनाने के योग्य है। 1870 में स्वाधीनता संग्राम हिन्दी भाषा ही जनमानस की भाषा थी, अंग्रेजी

Scanned with OKEN Scanner

या फारसी नहीं। उस प्रथम स्वत्रंता संग्राम मुख्य पत्र पनाम–ए–आजादी था जो दिल्ली से देवनागरी और फारसी (हिन्दी ऊर्दू) में निकलता था। प्रसिद्ध राष्ट्रभक्त स्वतंत्रता सैनानी अजीम इल्लाखा इसके सम्पादक थे।

सन् 1873 ई0 में अपनी भाषा अर्थात राष्ट्र की जनता की भाषा को स्वदेशीयपन के साथ जोड़ते हुए आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने यह उद्घोष किया।[3]

निजभाषा उन्नति है सब उन्नति को मूल

बिन निज भाषा ज्ञान कै, मिटै न हिय को सूल

प्राचलित करहुँ जहान में, निज भाषा करि जल

राजकाल दरबार में फैलाबहु यह रत्न

इसी वर्ष अर्थात् 1875 में दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की स्थापना की। उन्होंने 10 नियम बताए जिसमें से पाँचवा नियम था कि प्रत्येक आर्यसमाजी की हिन्दी पढ़ना अनिवार्य है।

सन् 1909 में कलकत्ता के प्रमुख हिन्दी पत्र भारत मित्र में बंकिमचन्द्र चट्टोपध्याय का एक लेख 'भारत की एकता' शीर्षक से छपा उसमें उन्होंने कहा –

''अंग्रेजी भाषा में चाहे जो हो लेकिन हिन्दी सीखे बिना काम नहीं चल सकता। हिन्दी भाषा के सहारे जो लोग विभिन्न प्रदेशों में एकता कायम कर सकेंगे वहीं वास्तव में भारत बन्धु के नाम से जाने जायेंगें।

यंग इण्डिया में महात्मा गाँधी ने 1931 ई0 में कहां कि –''अगर यह स्वराज्य करोड़ो भूखो मरने वालो का, करोड़ो निरक्षरो का, निरक्षर बहनो व दलितो अन्तयजों का हो तो सबके लिए हिन्दी एक मात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है।''[4]

''हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने में एक दिन भी खोना देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुँचाना है। – महात्मा गाँधी''

आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती संस्कृत में ही वाद विवाद करते थे। गुजराती उनकी मातृभाषा थी और हिन्दी का उन्हें सिर्फ कामचलाऊ ज्ञान था पर अपनी बात अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा देश की एकता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपना 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी में लिखा।

अरविन्द दर्शन के प्रणेता महर्षि अरविन्द कि सलाह थी कि लोग अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए सामान्य भाषा के रूप में हिन्दी को ग्रहण करें। थियोसोफिकल सोसायटी की संचालिका ऐनी बेसेन्ट कहती थी ''हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारत की यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मिल सकते है। भारत के सभी स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।[5]

इससे लगता है कि राष्ट्रीय समाज सुधारको की यह सोच बन चूकी थी कि राष्ट्रीय स्तर पर संवाद कायम रखने के लिए हिन्दी भाषा आवश्यक है। भावी राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को बढ़ाने का गुरूत्तर कार्य इन्हीं समाज सुधारकों ने किया।

हिन्दी की व्यापकता को देखकर इसाई मिशनरियो ने अपने धर्म प्रचार के लिए हिन्दी भाषा को चुना। इनके धर्म ग्रन्थ हिन्दी में छपे। मतलब यह था कि धर्म प्रचारको एवं समाज सुधारको का मुख्य उद्देश्य तो धर्म प्रचार था या सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना था माध्यम भाषा के रूप में अपनाए जाने पर हिन्दी भाषा को लाभ मिला।[6]

वर्ष 1929 में सुभाषचन्द्र बोस ने कहा प्रान्तीय ईर्ष्या द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं आयेगी। अपनी प्रान्तीय भाषाओं में भरपूर उन्नति कीजिए, उसमें कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन नही कर सकते पर सभी प्रान्तो की एक हिन्दी भाषा होनी चाहिए।[7]

Scanned with OKEN Scanner

चौथे दशक में हिन्दी राष्ट्र भाषा के रूप में आम जन की सहमति प्राप्त कर चुकी थी। गुजरात के ही सरदार बल्लभ भाई पटेल ने 1940 में कराची कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष हुए तो उन्होंने अपना भाषण पहले हिन्दी भाषा में पढ़ा और बाद में अंग्रेजी में सुभाष चन्द्र बोस ने 1918 एवं 1929 में अपना भाषण हिन्दी में देते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव दिलाने की बात की।[8]

निष्कर्षः— उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि राष्ट्रभाषा कोई संवैधानिक शब्द नहीं है, बल्कि यह प्रयोगात्मक, व्यावहारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्तर पर देश को जोड़ने का काम करती है। अर्थात राष्ट्र भाषा की प्राथमिक शर्त देश के विभिन्न समुदायों के बीच भावनात्मक एकता स्थापित करना है। राष्ट्रभाषा सारे देश की सम्पर्क भाषा होती है। क्योंकि उसी के साथ जनता का भावनात्मक लगाव होता है राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन ने देशवासियों के भीतर राष्ट्रीय अस्मिता की चाह जगायी थी राष्ट्रीय अस्मिता का एक अनिवार्य अंग है राष्ट्रभाषा की अस्मिता। वैसे तो राष्ट्र की सभी भाषाएँ राष्ट्रभाषाएं है। किन्तु राष्ट्र की जनता स्थानीय एवं तात्कालिक हितो एवं पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र की कई भाषाओं में से किसी एक भाषा को विशेष प्रयोजन के लिए चुनकर उसे राष्ट्रीय अस्मिता एवं गौरव गरिमा का एक आवश्यक उपादान समझने लगती है। तो वही राष्ट्र भाषा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. हिन्दी साहित्य का उदभव और विकास — डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास — डॉ. बच्चन सिंह
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास — डॉ. रामचन्द्र शुक्ल
4. हिन्दी साहित्य संवेदना और विकास — डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. कबीर साहित्य की परख, परशुरामचतुर्वेदी, पृष्ठ सं. 268।
6. भारतीय संस्कृति, डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, पृष्ठ सं. 371—372
7. तुलसीदास, सम्पादक रामचन्द्र तिवारी।
8. कबीर ग्रंथावली, सम्पादक डा. श्याम सुन्दर दास।

Scanned with OKEN Scanner